

वैदिक साहित्य : एक अध्ययन

Dr. Anil Kumar*

B.P.S.M.V., Regional Center, Lula Ahir Teaching Assistant, History

शोध सार – वेदों को हमारे राष्ट्र की संस्कृति माना जाता है। हमारी संस्कृति तथा रीति-रिवाज वेदों पर ही टिके हुए हैं। वेदों से ही राष्ट्र की प्रशासनिक, धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और व्यापारिक नीतियों का आधार है जो हमें अपने पूर्वजों से अर्थात् ऋषि-मुनियों से प्राप्त है। अनेक ऋषि-महर्षियों के हाथों एवं अनेक युगों से होकर आई हुई वैदिक ज्ञान की इस विरासत के संबंध से निरुक्तकार का कथन है कि ऐसे ऋषि हुए जिन्होंने तपस्या के द्वारा वेदरूपी धर्म का साक्षात्कार किया। दोबारा उन्हीं ऋषियों ने अपने बाद के ऋषियों को, जिन्हें उक्त धर्म का साक्षात्कार नहीं हुआ है अर्थात् जो वैदिक धर्म के स्वमेय साक्षात्कर्ता नहीं थे, वेदमंत्रों का उपदेश किया।”

मुख्य-शब्द: वेद, वैदिक-साहित्य, मंत्र, यजुर्वेद, ऋषि-मुनि, अथर्ववेद, सामवेद, ऋग्वेद।

-----X-----

विषय-विचार की दृष्टि से वेद ओर वैदिक साहित्य दोनों की अलग-अलग श्रेणियां हैं। 'वेद' शब्द से जहां चार मंत्र-संहिताओं का ही ज्ञान होता है, 'वैदिक' शब्द से वहां वेद विषयक बहुविध सामग्री का बोध होता है। यह बहुविध सामग्री ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् की है, जो मंत्र-संहिताओं से भिन्न है, किन्तु जिसका मंत्र-संहिताओं से अटूट संबंध है। यही वैदिक साहित्य के ग्रन्थ हैं। उपनिषद् ग्रन्थों के बाद परिगणित होने वाले षड्वेदांग भी, सम्बन्ध की दृष्टि से, वैदिक साहित्य के अन्तर्गत आ जाते हैं।

धर्म, संस्कृति, समाज, राजनीति, दर्शन, कर्म और अर्थसंबंधी विषयों के तुलनात्मक अध्ययन एवं उनके असमान पहलुओं को दृष्टि में रखकर भी वैदिक युग को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है: 1. पूर्व वैदिक युग और 2. उत्तर वैदिक युग। इस दृष्टि से भी पूर्व वैदिक युग में केवल वेद की चार संहिताएं और उत्तर वैदिक युग में ब्राह्मण ग्रन्थों से लेकर छह वेदांगों तक का साहित्य रखा जा सकता है।

'वेद' का शब्दार्थ है ज्ञान। यह ज्ञान मंत्रों में समाविष्ट है और इन्हीं मंत्रों के संकलन को संहिता कहा जाता है। वेद चार हैं, अतः उनकी संहिताएं भी चार हैं।

प्रत्येक वेद के चार भाग हैं: संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद्। संहिता, मंत्रों का वह भाग है, जिसमें वेदस्तुति वर्णित है एवं जिसको विभिन्न युगों में पढ़ा जा सकता है।

ब्राह्मण ग्रन्थों में मंत्रों के विधिभाग की व्याख्या है। आरण्यक-ग्रन्थों में वानप्रस्थी जीवन किताने वाले वीतराग मनस्वियों के कर्म-विधान प्रतिपादित हैं। उपनिषद्-ग्रन्थों में मंत्रों की दार्शनिक व्याख्या की गई है। इन्हीं का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया जाता है।

शाखाएं

वैदिक संहिताओं पर गंभीर चिंतन-मनन होने के पश्चात् कालांतर में, विभिन्न ऋषि-आश्रमों में अधिष्ठित विभिन्न ऋषि-सम्प्रदायों के द्वारा अपनी-अपनी रूचि के अनुसार जो नवीन विचार उद्भावित हुए उन्हीं का नाम शाखा है। प्रत्येक संहिता की कई शाखाएं निर्मित हुईं। ऋग्वेद की शाकल, वाष्कल, आशचलायन, शांखायन और माण्डूकेय ये पांच शाखाएं हुईं, जिनमें संप्रति शाकल शाखा ही उपलब्ध है। शुक्ल यजुर्वेद की मध्यंदिन और काण्व क्रमशः उत्तर-भारत और महाराष्ट्र में प्रचलित हैं। कृष्ण यजुर्वेद की संप्रति चार शाखाएं उपलब्ध हैं: तैत्तिरीय, मैत्रायणी, काठक और कठ। इसी प्रकार सामवेद की भी कौथुम राणायणीय दो शाखाएं थीं और अथर्ववेद की पैप्पलाद तथा शौनक ये दो शाखाएं उपलब्ध हैं।

ब्राह्मण-ग्रन्थ

वैदिक संहिताएं और उनकी शाखाओं के बाद ब्राह्मणग्रन्थों का समय आता है। ब्राह्मण-ग्रन्थ प्रधानतः कर्मकंड-विषयक हैं, किन्तु उनमें प्राचीन ऋषि वंशों और राजवंशों की कथाएं और जगत्संबंधी विचार भी वर्णित हैं। प्रत्येक वेद से संबंधित अलग-अलग ब्राह्मण हैं।

ऋग्वेद के ऐतरेय और कौषीतकी दो ब्राह्मण हैं। शुक्ल यजुर्वेद के ब्राह्मण का नाम शतपथ है। ऐतिहासिक दृष्टि से इस ब्राह्मण-ग्रन्थ का बड़ा मूल्य है। ऋग्वेद के बाद संभवतः इतने प्राचीन विवरण दूसरे ग्रन्थ में नहीं मिलते हैं। सामवेद के ब्राह्मण-ग्रन्थों में पंचविंश ही प्रमुख हैं। अथर्ववेद के ब्राह्मण का नाम गोपथ है।

आरण्य

विषय-प्रतिपादन की दृष्टि से ब्राह्मण और आरण्यक दोनों में अंतर नहीं है। आरण्यक वस्तुतः ब्राह्मण-ग्रन्थों के ही अंश हैं। जिस प्रकार ब्राह्मण-ग्रन्थों में गृहस्थाश्रम-संबद्ध यज्ञ-यागादि विधानों का वर्णन है उसी प्रकार आरण्यक-ग्रन्थों में वनवासी वानप्रस्थ जीवन का कर्मकाण्ड विहित है। जन-संकुल अनेकांत से दूर एकांत जंगलों में अध्ययन-अध्यापन होने के कारण इन ग्रन्थों का आरण्यक नामकरण हुआ। इन आरण्यक-ग्रन्थों से दर्शनसंबंधी तत्वों का भी प्रतिपादन है, जिनका पूर्ण विकास हम आगे चलकर उपनिषद्-ग्रन्थों में पाते हैं।

उपनिषद्

वैदिक-साहित्य के अंतिम भाग होने के कारण उपनिषद्-ग्रन्थों का दूसरा नाम वेदांत भी है। उपनिषद् ब्रह्मविद्या के प्रतिपादक ग्रन्थ हैं। महामनस्वी भारतीय ऋषियों के सुदीर्घ काल तक जिस चिंतन-मनन के द्वारा आत्मज्ञान, ब्राह्मज्ञान और सृष्टिज्ञान की उपलब्धि हुई, उपनिषद् उन्हीं विधानों के संकलन हैं।

‘मुण्डकोपनिषद्’ में उपनिषद्-ग्रन्थों की संख्या 102 गिनाई गई है, जिनमें ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक और श्वेताश्वतर, ये 11 प्रमुख हैं। इनमें भी प्राचीनता की दृष्टि से छान्दोग्य और बृहदारण्यक का विशेष महत्व है।

सूत्र-ग्रन्थ

कम-से-कम शब्दों में अधिक-से-अधिक अर्थ प्रतिपादित करने वाली जिस नई शैली का जन्म हुआ उसी का नाम ‘सूत्र’ है। इस नवीन शैली का इसलिए आविर्भाव हुआ कि वैदिक यज्ञों की जटिल विधियों को हृदयंगम करने में कठिनाई न हो। ये सूत्र-ग्रंथ चार भागों में विभक्त हैं-श्रौतसूत्र गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र और शुल्वसूत्र। श्रौतसूत्रों का विषय है वैदिक यज्ञों के विधि-विधान प्रतिपादित करना। गृह्यसूत्रों में गृहस्थ-जीवन-संबद्ध कर्म-कलापों का वर्णन, धर्मसूत्रों में सामाजिक व्यवस्थाओं के विधान और चैथे शुल्वसूत्रों में यज्ञ-वेदिकाओं के निर्माण की विधियाँ उल्लिखित हैं।

श्रौतसूत्र

ऋग्वेद के दो श्रौतसूत्र हैं: शांखायन और अश्वलायन। शुक्ल यजुर्वेद का एक: कात्यायन। कृष्ण यजु. के छह: आपस्तंब, हिरण्यकेशी, बौधायन, भारद्वाज, मानव, वैखानस। सामवेद के तीन: लाटायन, द्राहयायण और आर्षेय, और अथर्ववेदों का एक वैतान सूत्र है।

गृह्यसूत्र

ऋग्वेद के शांखायन, अश्वलायन, शुक्ल यजुर्वेद का पारस्कर, कृष्ण-यजुर्वेद के आपस्तंब, हिरण्यकेशी, बौधायन, मानव, काठक, वेखानस, सामवेद के गोभिल, खाडिट और अथर्ववेद का कौशिक गृह्यदूत्र है।

धर्मसूत्र

यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा से संबद्ध: आपस्तंब, हिरण्यकेशी और बौधायन। दूसरे धर्मसूत्रों में गौतम और वशिष्ठ प्रमुख हैं।

शुल्वसूत्र

ये श्रौतसूत्रों से संबंधित हैं। शुल्व कहते हैं, मापने के ढोरे को। यज्ञवेदिकाओं के लिए उपयुक्त स्थान का निर्धारण, उनके आकार-प्रकार की व्यवस्था और उनके निर्माण की योजना, ये बातें शुल्वसूत्रों में वर्णित हैं। शुल्वसूत्र भारतीय ज्यामिति के प्राचीन ग्रन्थ हैं।

वेदांग

यद्यपि वैदिक साहित्य का सीमा-विस्तार ब्राह्मणग्रन्थों से लेकर उपनिषद् ग्रन्थों पर्यन्त ही बताया जाता है, किन्तु विषय और संबंध की दृष्टि से षड्वेदांगों की गणना भी वैदिक साहित्य के अंतर्गत की जानी चाहिये। षड्वेदांगों के मूल सूत्रों को लेकर यद्यपि आगे स्वतंत्र शास्त्रों की रचना हुई और इस दृष्टि से यद्यपि लौकिक साहित्य के लिए ही वे अधिक उपयोगी सिद्ध हुए हैं, तथापि मूलतः उनके निर्माण का उद्देश्य वैदिक साहित्य एवं वेदांगों का ही स्वरूप-प्रतिपादन करना रहा है। ये वेद वैदिक साहित्य के विधान-ग्रन्थ होने के कारण उन्हीं के अन्तर्गत आते हैं।

संहिताएं

पहिले संकेत किया जा चुका है कि सम्मिश्रित वेदमंत्र अनेक ऋषि-संप्रदायों, कई विद्या-निकेतनों और विभिन्न युगों में संकलित, संपादित होकर संप्रति वर्तमान संहिताओं के रूप में वर्गीकृत हुए। व्याकरण-व्युत्पत्ति के अनुसार संहिता उसको कहते हैं, जिसमें पदों के अंत का दूसरे पदों के आदि से मिलान किया जाता है।[1] प्रातिशाख्यों के कथनानुसार पदों की मूल प्रकृति ही संहिता है।[2] मूल वैदिक मंत्र अपृथक् रूप से एक साथ सन्नद्ध थे, और जब उनको अलग-अलग छांटा गया तो उनकी पृथक-पृथक संहिताएं और तदनन्तर उनकी भी शाखाएं निर्मित हुईं।

प्राचीन ऋषि-आश्रमों में अध्ययन और शिक्षण के जो अनेक संप्रदाय प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुके थे, उन्हें ही चरण एवं शाखा कहा जाता था। उन्हीं चरणों एवं शाखाओं द्वारा वेदों का अध्ययन, संपादन और शिक्षण, दीर्घकाल से होता आ रहा था। उन्हीं चरणों एवं आश्रमों में वैदिक ज्ञान के दूसरे विषयों (वेदांगों) का भी निर्माण हुआ।[3]

शाखा-विभाजन के इन तरीकों के संबंध में पं. सत्यव्रत सामश्रमी ने 'ऐतरेयालोचन' में कहा है कि: ये वेदशाखाएं, वृक्षशाखाओं या नदीशाखाओं की भांति विभाजित न होकर पठन-पाठन में विधि-विधानों के अनुसार पृथक् हुईं।[4]

इस प्रकार वेदमंत्रों की विभक्त संहिताएं ही वैदिक संहिताएं कइलाई, जिनकी संख्या चार है और जिनकी शाखाएं फिर अनेक नामों से प्रकाश में आईं।

वेद चार हैं। प्रत्येक वेद की अपनी अलग-अलग संहितायें हैं। विभिन्न प्राचीन ग्रन्थों में वेदों की अनेक संहिताओं के विषय में

जो उल्लेख मिलते हैं, तद्विरुद्ध संप्रति कुछ ही संहिताएं मिलती हैं। ऋग्वेद की 21 संहिताएं बताई गई हैं[5], किन्तु संप्रति उसकी एक ही संहिता उपलब्ध है, जिसका नाम है: 'शाकल-संहिता'। इस संहिता की पांच शाखाएं हैं, जिनका उल्लेख यथास्थान किया जायेगा।

'शाकल-संहिता' और उसकी पंचविध शाखाओं के संबंध में भी जयचन्द्र विद्यालंकार का मत है कि एक समय एक वृहद् यज्ञ के अवसर पर विदेह जनक की विशाल विद्वत्परिषद् में याज्ञवल्क्य के साथ कुर-पांचल ब्राह्मणों का शास्त्रार्थ हुआ। इस शास्त्रार्थ में जब सब ब्राह्मण पराजित हो गए, तब विदग्ध शाकल्य के संबंध में भी विद्यालंकार जी का कथन है कि "शाकल-नगरी पंजाब के उत्तरी भाग में मद्र देश की राजधानी थी, आधुनिक स्यालकोट उसे सूचित करता है। शाकल्य का असल नाम देवमित्र था, विदग्ध उसकी छेड़ थी, क्योंकि उसे अपने ज्ञान का बड़ा गर्व था। उसने ऋग्वेद का संपादन भी किया और उसकी या उसके शिष्यों की संपादित शाखाएं 'शाकल संहिता' कहलाती थीं।[6]

इन दस मण्डलों में क्रमशः 191, 43, 62, 58, 87, 75, 104, 92, 114, और 191 सूक्तक हैं। प्रत्येक सूक्तक का प्रधान विषय किसी दिव्य शक्ति की स्तुति करना है।

निष्कर्ष:

निष्कर्ष में शोधकर्ता का मानना है कि वैदिक-साहित्य या वेदों में वो सब कुछ लिखा गया है, जो अब तक घटित हुआ है। वेदों में संस्कृति, नैतिकता, रीति-रिवाज तथा परम्परा से लेकर, ऋषि-मुनियों की तपस्या, राजाओं का राजयोग, ब्राह्मणों की पूजा-पाठ आदि सभी वेदों में वर्णन किया गया है। वेद 4 हैं: सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद तथा ऋग्वेद। ऋग्वेद सबसे पुराना तथा महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। सभी वेद संस्कृत भाषा में लिखे गये हैं। वर्तमान समय में वेदों को इतनी महत्ता नहीं दी जाती जितनी ऋषि-मुनियों के समय में दी जाती थी। यह वास्तविकता है कि आज इनकी महत्ता घट रही है। लेकिन जब हम रीति-रिवाजों, परम्परा, नैतिकता, धर्मयुद्ध, सभ्यता, ईश्वर, साहित्य की बात करते हैं तो वेदों की महत्ता बढ़ जाती है। विद्वानों का मानना है कि वेदों के बिना धरती का ज्ञान अधूरा है।

सन्दर्भ-सूची

1. परः सन्निकर्षः संहिता अष्टाध्यायी 1/4/109
(पदान्तात् पदादिभिः सन्दधातीतिसंहिता)
2. पदप्रकृतिसंहिता-ऋक्प्रातिशाख्यं
3. जयचंद्र विद्यालंकारः भारतीय इतिहास की रूपरेखा
1, पृ. 298-299
4. तत्त्वतो न हि वेदशाखा वृक्षशाखेव, नापि नदीशाखेव,
प्रत्युत अध्येतृभेदात्
संप्रदायभेदजन्याध्ययनविशेषरूपैव।
5. महाभाष्य (परएशाहिक)
6. जयचन्द्र विद्यालंकारः भारतीय इतिहास की रूपरेखा
1, पृ. 295

Corresponding Author

Dr. Anil Kumar*

B.P.S.M.V., Regional Center, Lula Ahir Teaching
Assistant, Historydharam.jajoria@gmail.com